प्रभात प्रकाशन का 73वां साल
स्थापित 1944
प्रभात
सीधी बात-सच्ची बात
लखनऊ, मंगलवार, 17 अक्टूबर 2017

क्यों मनाते हैं धनतेरस!

लखनऊ। प्रभात

प्रो. भरत राज सिंह

धनतेरस हिंदी के दो शब्दों से बना है- धन और तेरस। धन का मतलब वैभव (धन) और तेरस का मतलब तेरहवां। धनतेरस कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष के तेरहवें दिन अर्थात दिवाली के दो दिन पूर्व मनाया जाता है। धनतेरस को धन्वंतरी त्रिदोशी या धंत्रोधी भी कहा जाता है। भारत वर्ष में धनतेरस को बहुत ही उत्साह के साथ मनाया जाता है। किवदंती है कि इस दिन भगवान कुबेर की देवी लक्ष्मी के साथ भी पूजा की जाती है ।

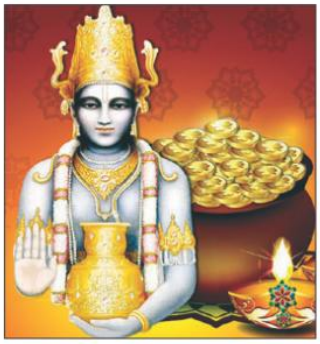

भगवान धन्वंतरी जिन्हें देवताओं के चिकित्सक और भगवान विष्णु का अवतार भी माना जाता है, को महासागर से देवताओं और राक्षसों द्वारा मंथन के उपरान्त (जो धनतेरस के दिन किया गया था), बाहर आया हुआ माना जाता है। भगवान धन्वंतरी मानव जाति के कल्याण के लिए आयुर्वेदिक के साथ उत्पन्न हुए। कहानी यह भी है कि राजा हिमा के पुत्र के बारे में भविष्यवाणी की गई थी कि वह अपनी शादी के चौथे दिन मर जायेंगे और इनकी मृत्यु सांप के काटने से होगी। जब इस तरह की भविष्यवाणी के बारे में उनकी पत्नी को पता चला तो उसने पति की मृत्यु नहीं होने देने का फैसला किया और एक योजना बनाई। उनकी शादी के चौथे दिन उसने सभी प्रवेश द्वार पर धन और जवाहरात एकत्र किए और जगह के प्रत्येक नुक्कड़ और कोने को रोशनी कर दी। तब वह गाने गाती रही और अपने पति को सोने नहीं दिया और एक के बाद एक कहानियं सुनाती रही।

मध्यरात्रि में भगवान यम, एक सांप का रूप धर कर आए। दीपक की उज्वल रोशनी और चमक ने उनको अंधा कर दिया और वह उसके पति के कक्ष में प्रवेश नहीं कर सके। इस प्रकार, भगवान यम, राजा के पुत्र को काटने का मौका ना पा सके और वो अपने पति के जीवन को बचाने में सफल रही। तब से धनतेरस दिवस को दिव्य देवता या भगवान के समक्ष दीपक, दीया पूरे रात में जलाना एक अनुष्ठान बन गया है और इसे यम दीपदान का दिन भी कहते हैं।

धनतेरस के उक्त कथनों पर यदि गौर करें तो धनतेरस और दिवाली मौसम जो बरसात के अन्त और शरद ऋतू (जाड़े) के शुरुआत के दौरान आती है। धनतेरस का अर्थ भी स्पष्ट हो जाता है तथा कड़ुआ तेल से दीप जलने व उसकी तीखी गन्ध से कीड़े-मकोड़े व सांप-बिच्छु या तो मर जाते हैं या भाग जाते हैं। इसको संभवतः भगवान धन्वन्तरी की कथा से जोड़ा गया है। रही बात धन-कुबेर की, तो जब आप किसी पीले धातु पर रोशनी डालेंगे तो वह बहुत अधिक प्रकाशित होगी जिसके चमक से भी कीड़े-मकोड़े व सांप-बिच्छु आस-पास नहीं आयेंगे और इसका दूसरा पक्ष यह भी है कि यह धातुएं संचित करने से जीवन में आगे के लिए भी अधिक उपयोगी होगी। प्रकाश जीवन के लिए बहुत उपयोगी होता है और पूजा-पाठ से मूर्तियों में ऊर्जा का संचयन होता है जो आपको सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती है। आप प्रसन्न रहते हैं और आप में प्रतिरोधक क्षमता का भी विकास होता है। इसीलिए हिन्दू रीति-रिवाज में मूर्ति पूजा का अधिक महत्व दिया गया है।

आइये! धनतेरस और दिवाली के त्योहार को बड़े उत्साह से मनायें और क्रैकर-आतिशबाजी से दूर हटकर पर्यावरण के संरक्षण में भाग लें तथा धरती और मानवता को बचाएं।